IJIRSET

International Journal of Innovative Research in
SCIENCE | ENGINEERING | TECHNOLOGY

e-ISSN: 2319-8753 | p-ISSN: 2347-6710

INTERNATIONAL JOURNAL OF INNOVATIVE RESEARCH

IN SCIENCE | ENGINEERING | TECHNOLOGY

Volume 11, Issue 11, November 2022

INTERNATIONAL
STANDARD
SERIAL
NUMBER
INDIA

Impact Factor: 8.118

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology (IJIRSET)

(A High Impact Factor, Monthly, Peer Reviewed & Referred Journal)

| e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2320-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 8.118|

||Volume 11, Issue 11, November 2022||

| DOI:10.15680/IJIRSET.2022.1111121 |

हिन्दी व्यंग्य परम्परा में नारायण सिंह राजावत 'दिलचस्प' का स्थान

संगीता रोहिला

सहायक आचार्य–हिन्दी

चूरू बालिका महाविद्यालय

चूरू (राजस्थान)

सारांश

साहित्य जीवन की अनुभूतियों का चित्रण है जिसमें समाज के आरोह–अवरोह को बखूबी देखा जा सकता है। साहित्यकार साहित्य के माध्यम से ही समाज के लोगों की आकांक्षाओं, सुख–दुःख, परम्परा, रीति–रिवाज आदि को समयानुसार अभिव्यंजित करता है।

व्यंग्य साहित्य की एक विधा है, जिसमें रचनाकार मजाक के माध्यम से सामाजिक यथार्थ को प्रस्तुत करता है। नारायण सिंह राजावत 'दिलचस्प' जी ने इसी विधा को आगे बढ़ाने में योगदान दिया है। राजनीति और समाज सुधार की कटु से कटु बातें हास्य–व्यंग्य के सहारे कम से कम आपत्तिजनक और रोचक शब्दों में प्रस्तुत की है। 'दिलचस्प' किसी एक दिशा को पकड़ कर नये ढ़ंग से सोचते हुए चिन्तन कर मौलिक रचनाएं लिखते हैं। 'दिलचस्प' ने अपनी रचनाओं में सभी क्षेत्रों में जीवन के विघटन पर चुभता हुआ व्यंग्य किया है। धर्म और राजनीति के खूबसूरत मुखौटे को अनावृत किया है।

'खुदा मिल गया बुतखाने में'; 'अनमोल अफसाने'; 'अंधविष्वास पर प्रहार'; 'आम चुनाव'; 'कुछ खट्टी कुछ मीठी' *जैसी रचना समय के साथ गहरी होती स्वाधीनता की तल छट और लगातार कठोर होते हुए सामाजिक और राजनीतिक अन्याय के विरूद्ध एक साधारण आदमी असाधारण खीझ, क्रोध और प्रतिरोध का दस्तावेज है।*

मूल बिन्दु : हिन्दी व्यंग्य, स्वाधीनता, साहित्य, वक्रोक्ति

(A High Impact Factor, Monthly, Peer Reviewed & Referred Journal)
| e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2320-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 8.118|
||Volume 11, Issue 11, November 2022||
| DOI:10.15680/IJIRSET.2022.1111121 |

परिचय :

साहित्य जीवन के अनुभवों का चित्रण है, जिसमें समाज में हो रहे बदलाव, उतार–चढ़ाव को सहज रूप से देखा जा सकता है। इसी कारण साहित्य समाज का दर्पण कहलाता है। साहित्य एवं समाज परस्पर घनिष्ठ संबंध रखते हैं। साहित्यकार साहित्य के माध्यम से ही समाज के लोगों की आशाएं, सुख–दुःख, रीति–रिवाज, परम्परा आदि को परिस्थितियों व समय के अनुसार अभिव्यक्त करता है। प्रत्येक युग का साहित्य उस युग की विशेषताओं को प्रकट करता है। इसी कारण विद्वानों का मानना है कि अगर हमें किसी भी युग के साहित्य को समझना है तो उस युग की परिस्थितियों को अध्ययन करना आवश्यक है तभी हम उस साहित्य एवं उसके महत्व को बखूबी समझ सकेंगे।

साहित्य अथाह भण्डार है, जिसमें कई विधाओं को समावेश होता है। साहित्यकार सहृदय होता है और सामाजिक उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए साहित्य सृजन में निरन्तर रत रहता है। साहित्यकार समाज और समाज के लोगों के प्रति अपना कर्त्तव्य समझते हुए समाज में व्याप्त विसंगतियों को अनुभूत करते हुए और अपनी अनुभूति को शब्दों और वाणी के माध्यम से तटस्थता के साथ अभिव्यक्ति देता है। सामाजिक यथार्थ का चित्रण करते हुए साहित्यकार समाज के आदर्श रूप को भी प्रस्तुत करता है। यह करते हुए साहित्यकार को बहुत से संघर्षों के साथ आगे बढ़ना है। अभिव्यक्ति का यह सफर एक साहित्यकार के लिए आसान नहीं होता किन्तु फिर भी साहित्यकार अपने कर्म को अपना ध्येय मानते हुए बहुत ही रोचक ढ़ंग से समाज के सामने प्रस्तुत करता है ताकि समाज के लोग सचेत हो सके।

व्यंग्य भी साहित्य की एक विधा है जिसके माध्यम से रचनाकार सामाजिक यथार्थ को मजाक, उपहास के द्वारा पाठक तक पहुँचाता है एवं पाठक की चेतना पर चोट करता है कि जो भी रचनाकार को पढ़ता है वह सोचने पर मजबूर हो जाता है। इस तरह से व्यंग्य को जीवन की अप्रत्यक्ष समीक्षा कहा जाता है। नारायण सिंह राजावत 'दिलचस्प' जी ने भी इसी विधा को आगे बढ़ाने में अपना योगदान दिया है।

व्यंग्य का इतिहास प्राचीन रहा है। आजादी के पश्चात् सामाजिक सरोकारों से संबन्धित अनेक श्रेष्ठ लेखक है जिनमें मुख्य रूप से हरिशंकर परसाई का नाम मुख्यतया याद रखा जाता है जिन्होंने व्यंग्य को एक नई दिशा प्रदान की और व्यंग्य के प्रति जो उपेक्षा भाव था उसे साहित्य की श्रेष्ठ विधा के रूप में स्थापित किया। इनके अलावा बहुत से लेखकों ने व्यंग्य विधा को आगे बढ़ाने में अपना योगदान दिया जिनमें शंकर पुणतांबेकर, नरेन्द्र कोहली, गोपाल चतुर्वेदी, श्रीलाल शुक्ल आदि का नाम मुख्यतया आता है। वर्तमान में नारायण सिंह राजावत 'दिलचस्प' भी इसी परम्परा को आगे बढ़ाने में अपना अमूल्य योगदान दे रहे हैं।

(A High Impact Factor, Monthly, Peer Reviewed & Referred Journal)
| e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2320-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 8.118|
||Volume 11, Issue 11, November 2022||
| DOI:10.15680/IJIRSET.2022.1111121 |

नारायण सिंह राजावत 'दिलचस्प' नाम से चर्चित है। इनका जन्म राजस्थान राज्य के चूरू शहर में 15 फरवरी, 1945 में माता श्रीमती मगन कंवर एवं पिता श्री चन्द्रसिंह राजावत के घर में हुआ। इनकी विधिवत् शिक्षा भले ही मैट्रिक तक रही, लेकिन इनके कारनामें गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकार्ड तक छाए हुए है। प्रगतिशील विचारों को समर्पित दिलचस्प सन् 1965 से लेखन कार्य करते आ रहे हैं। इनका डाक पता दुनियां का सबसे छोटा पोस्टल एड्रेस है। अगर कोई इन्हें खत पोस्ट करना चाहे तो इनके पते के स्थान पर **दिलचस्प– चूरू–331001** लिखना होगा और डाक इनके हाथों में होगी।

मनोरमा इयर बुक में 'वर्ष के कीर्तिमान' एवं 'भारतीय सिनेमा' स्तम्भ में लगातार स्थान पाने वाले दिलचस्प के असंख्य आलेख, विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं में छपकर पाठकों को लाभान्वित करते रहे हैं।

भोपाल (मध्य प्रदेश) बोर्ड की परीक्षा में अनुक्रमांक लेखन का विश्व रिकार्ड बनाने वाले दिलचस्प की ग्यारह विभिन्न प्रकाशकों से 16 पुस्तकें छप चुकी हैं। तीन पुस्तकों का द्वितीय संस्करण भी निकला है। दिलचस्प जी की जितनी भी पुस्तकें आई हैं उनमें विषय की पकड़ गहरी और अपने नाम के अनुकूल दिलचस्प रही हैं। विषय चाहे 'राष्ट्रभाषा हिन्दी' का हो या फिर भारतीय सिनेमा का हो; इन सबकी विवेचना गहराई से और मनभावन स्तर तक करने की लेखक में महारथ हासिल है।

व्यंग्य का अर्थ :

व्यंग्य के अर्थ को भली प्रकार से समझने के लिए भारतीय काव्यशास्त्र को जानना बहुत आवश्यक है, जिसमें ध्वनि सम्प्रदाय के अन्तर्गत आने वाले आचार्यों ने ध्वनि से संबंधित मत प्रस्तुत किया और ध्वनि से युक्त काव्य को अत्तम काव्य की श्रेणी में रखा हैं। आनंदवर्धन ने बताया है कि प्रतीयमान अर्थ ही ध्वनि है तथा प्रतीयमान अर्थ को स्पष्ट करते हुए उन्होंने बताया है कि प्रतीयमान अर्थ व्यंग्यार्थ ही है। व्यंजना शब्द शक्ति से निकलने वाला व्यंग्यार्थ ही व्यंग्य है।

भारतीय काव्यशास्त्र में वक्रोक्ति सिद्धान्त को भी व्यंग्य के आधार के रूप में स्वीकार किया है जिसमें आचार्य कुन्तक ने स्पष्ट किया है कि वक्रोक्ति किसी बात को अलग तरीके से कहना हैं जहाँ किसी बात को सीधे–सीधे न कहकर अलग तरीके से कहा जाता है उसे वक्रोक्ति कहते हैं। व्याकरणशास्त्र में प्रमुख वैयाकरणों का मानना है कि ध्वनि का आधार स्फोट है। स्फोट का संबंध व्यंजना शक्ति से जुड़ा हुआ है। जहाँ व्यंग्यार्थ भावों का स्फुटन मस्तिष्क में होता है वहीं व्यंग्य है।

व्यंग्य का अर्थ तीखी वाणी से किये जाने वाले तल्ख प्रहार से है व्यंग्य में रचनाकार का आक्रोश झलकता है और वह शब्दों के माध्यम से नुकीली चुटकियां लेते हुए सीधे दोषी व्यक्ति पर प्रहार करता है।

(A High Impact Factor, Monthly, Peer Reviewed & Referred Journal)

| e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2320-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 8.118|

||Volume 11, Issue 11, November 2022||

| DOI:10.15680/IJIRSET.2022.1111121 |

उपर्युक्त सभी बातों को समावेशित करते हुए अगर व्यंग्य के अर्थ की बात की जाए तो वह इस प्रकार से हो सकता है—

> **"हिन्दी में व्यंग्य शब्द का प्रयोग अंग्रेजी के 'सटायर' के पर्याय के रूप में किया जाता है। व्यंग्य का मूल आधार विसंगति और विडम्बना है।''**
> (हिन्दी साहित्य का इतिहास : विजयेन्द्र स्नातक, पृष्ठ सं. 418)

परिभाषा :

व्यंग्य एक माध्यम है जिससे सामाजिक यथार्थ से लोगों को परिचित करवाया जाता है। व्यंग्य समाज के व्यक्तियों को गुदगुदाता नहीं अपितु उसे भीतर तक झकझोर देता है। व्यक्ति समाज में व्याप्त अव्यवस्था और विसंगतियों को देखकर तड़प उठता है और उन विसंगतियों को समाज से दूर करके ही दम लेता हैं। व्यंग्य को संस्कृत साहित्य, पाश्चात्य साहित्य, अंग्रेजी साहित्य और शब्दकोशों में भी परिभाषित किया गया है जिनका अध्ययन व्यंग्य की मार्मिकता को समझने के लिए आवश्यक हैं।

आक्सफोर्ड इंग्लिष डिक्षनरी — ''व्यंग्य वह पद्यमय अथवा गद्य रचना है जिसमें प्रचलित दोषों अथवा मूर्खताओं का कभी—कभी कुछ अतिरंजना के साथ मजाक उड़ाया जाता है। इसका अभीष्ट किसी व्यक्ति विशेष अथवा व्यक्तियों के समूह का उपहास करना होता है अर्थात जो व्यक्तिगत आक्षेप लेख के समान होता है।'' (हिन्दी व्यंग्य साहित्य और हरिशंकर परसाई— डॉ. मदालसा व्यास, पृष्ठ सं. 2)

हरिशंकर परसाई ने व्यंग्य के बारे में जो कुछ कहा है उसे इस तरह परिभाषित किया जा सकता है —

(1) व्यंग्य जीवन से साक्षात्कार कराता है, जीवन की आलोचना करता है, विसंगतियों मिथ्याचारों और पाखण्डों का पर्दाफाश करता है।

(2) सच्चा व्यंग्य जीवन की समीक्षा करता है। वह मनुष्य को सोचने के लिए बाध्य करता है, अपने से साक्षात्कार कराता है, चेतना में हलचल पैदा करता है और जीवन में व्याप्त मिथ्याचार, पाखण्ड, असामंजस्य और अन्याय से लड़ने के लिए उसे तैयार करता है।

(हिन्दी व्यंग्य साहित्य और हरिशंकर परसाई— डॉ. मदालसा व्यास, पृष्ठ सं. 4)

नरेन्द्र कोहली — ''कुछ अनुचित, अन्यायपूर्ण अथवा गलत होते देखकर जो आक्रोश जगाता है, वह यदि काम में परिणत हो अपनी असहायता में वक्र होकर जब अपनी तथा दूसरों की पीड़ा पर हँसने लगता है तो वह विकट व्यंग्य होता है, पाठक के मन को सहलाता नहीं कोड़े लगाता है। अतः सार्थक एवं सशक्त व्यंग्य कहलाता है।'' (मेरी श्रेष्ठ व्यंग्य रचनाएं— डॉ. नरेन्द्र कोहली पृ.सं. 8)

(A High Impact Factor, Monthly, Peer Reviewed & Referred Journal)
| e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2320-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 8.118|

||Volume 11, Issue 11, November 2022||

| DOI:10.15680/IJIRSET.2022.1111121 |

हिन्दी साहित्य में व्यंग्य का विकास :

व्यंग्य की शुरूआत के बारे में अगर जानना चाहे तो इसकी शुरूआत आदिकाल से ही हो चुकी थी। कबीर प्राचीन काल में श्रेष्ठ व्यंग्यकार की श्रेणी में रखें जा सकते हैं। उन्होंने समाज में व्याप्त विसंगतियों पर अपनी वाणी से करारा प्रहार किया। समाज में व्याप्त आडम्बर और छूआछूत को देखकर कबीर चुप नहीं रह सके। उन्होंने अपने पदों मे मुल्ला, पंडितों पर व्यंग्य किया। कबीरदासजी ने कभी किसी से समझोता नहीं किया उन्होंने सीधी फटकार लगाई हैं। सवालों की ऐसी बौछार वे समाज के ठेकेदारों पर करते है कि वे सभी उनका मुँह ताकते रह जाते हैं।

कबीर के बाद भक्तिकाल में तुलसीदासजी के काव्य में व्यंग्य की झलक देखने को मिलती है। रीतिकालीन साहित्य में भी कहीं–कहीं व्यंग्य की झलक देखने को मिलती है। इनमें बिहारी का नाम मुख्यतया लिया जा सकता है। आधुनिक काल में गद्य का विकास हुआ, जिसके साथ व्यंग्य का भी विकास हुआ। आधुनिक काल में भारतेन्तु युग के व्यंग्य की शुरूआत हुई। इस समय भारतीय समाज व संस्कृति अंग्रेजी संस्कृति के रंग मे ंरंग चुकी थी। भारतेन्दु हरिशचन्द्र ने ब्रिटिश शासन की लालची और लुटेरे चरित्र को अंग्रेज स्त्रोत में व्यंग्यात्मक रूप से अभिवयक्ति दी हैं और कहा है– ''खजाना तुम्हारा पेट है। लालच तुम्हारी क्षुधा है, सेना तुम्हारा चरण, खिताब तुम्हारा प्रसाद है अतएव हे विराट रूप अंग्रेज। हम तुमको प्रणाम करते है।'' (ब्रजरतनदास (सम्पादित) भारतेन्दु ग्रंथावली भाग–3 पृ.सं. 858)

भारतेन्दु के बाद व्यंग्य के विकास में योगदान देने में बालकृष्ण भट्ट, प्रताप नारायण मिश्र, बालमुकुन्द गुप्त, महावीर प्रसाद द्विवेदी, चन्द्रधर शर्मा गुलेरी, निराला, केदारनाथ अग्रवाल, हरिशंकर परसाई, प्रभाकर मानवे, शरद जोशी, श्रीलाल शुक्ल आदि का प्रमुख स्थान है।

इस प्रकार प्रारम्भ से लेकर वर्तमान तक व्यंग्य एक स्वतंत्र विधा के रूप में लगातार साहित्य में अपना योगदान दे रही है। व्यंग्य के माध्यम से व्यंग्यकार सामाजिक विसंगतियों, भ्रष्टाचार, बेईमानी आदि पर प्रहार करता और सत्य को जनता तक पहुँचाने का प्रयास करता है। नारायण सिंह राजावत 'दिलचस्प' ने रचनात्मक साहित्य में विचारात्मक, भावात्मक विधानों का बड़ा सुन्दर मेल किया है, स्वाधीनता के बाद के लेखकों में देश व समाज के प्रति गहरी दिलचस्पी थी, इस कारण इनके लेखों में समाज सुधार की भावना मुख्य थी। 'दिलचस्प' के लेखों में अपनी संस्कृति व भारतीय जीवन के साथ प्रेम झलकता है। राजनीति और समाज से जुड़ी कटु से कटु बातें हास्य–व्यंग्य के सहारे कम से कम आपत्तिजनक और रोचक शब्दों में प्रस्तुत की है।

'खुदा मिल गया बुतखाने में' 'अनमोल अफसाने' जैसी रचना समय के साथ गहरी होती स्वाधीनता की तल छट और लगातार कठोर होते हुए सामाजिक और राजनीतिक अन्याय के विरूद्व एक साधारण आदमी

(A High Impact Factor, Monthly, Peer Reviewed & Referred Journal)
| e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2320-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 8.118|
||Volume 11, Issue 11, November 2022||
| DOI:10.15680/IJIRSET.2022.1111121 |

असाधारण खीझ, गुस्से और प्रतिरोध का दस्तावेज है। इनकी रचनाएं पूरी व्यवस्था के विरूद्ध कटाक्ष के साथ–साथ एक रचनात्मक विद्रोह की आहट है। इनके व्यंग्य पाठक सहज समझ जाता है। 'दिलचस्प' का साहित्य (व्यंग्य) समाज में व्याप्त अव्यवस्था पर आक्रोश के साथ हमला करता है।

दिलचस्प की रचनाओं में सामाजिक यथार्थ :

व्यक्ति की परवरिश समाज में होती है। अबोध अवस्था के पश्चात् वह जो कुछ समाज में देखता है, उसे दिमागी रूप में ग्रहण करता है। साहित्यकार समाज और देश से सरोकार रखते हुए आगामी पीढ़ी को अपने स्व का बोध कराता है उसे दिशा निर्देश देता है। मंज़िल बताता है, अच्छे–बुरे का भेद बताता है यानि व्यक्ति के सर्वांगीण विकास की ओर उन्मुख होता हैं। 'दिलचस्प' को समाज के यथार्थ का बोध समाज में रहकर, वातावरण को महसूस करके हुआ। उन्होंने समाज में जो कुछ देखा भोगा उसे अपनी कलम के द्वारा पाठकों तक पहुँचाया। 'दिलचस्प' के लेखन में कहीं नकलीपन नहीं झलकता क्योंकि वे धरातल से जुड़े हैं।

रचनाकार को संवेदशील होना आवश्यक है। जब तक रचनाकार किसी घटना से जुड़ता नहीं तब तक उसके लेखन में प्रभाव उत्पन्न नहीं होता। 'दिलचस्प' में संवेदनशीलता कूट–कूट कर भरी हुई थी। 'दिलचस्प' पर छोटी–छोटी वस्तु में उसके अस्तित्व का बोध तलाशते हैं और अपने पाठकों को बोध कराते हैं। इस कारण नारायण सिंह राजावत 'दिलचस्प' की रचनाओं में सामाजिक यथार्थ का चित्रण हुआ हैं। समाज में जिस ढ़ंग की परिस्थितियां मौजूद है उनका हू–ब–हू चित्रण करना रचनाकार का असली धर्म माना जाता है। यह साहित्यकार की सोच व चिंतन होता है कि वह सामाजिक यथार्थ में कल्पना का समावेश करता है और एक ऐसे समाज की रचना करता है जिसे आदर्श समाज कहा जा सके। व्यंग्यकार 'दिलचस्प' की समस्त व्यंग्य रचनाओं में सामाजिक यथार्थ का अंकन है। 'दिलचस्प' अपनी हर रचना में खामी को प्रकट करते हैं और चाहतें है कि खामी की भरपाई अभी हो। वे उद्विग्न होते हैं, व्याकुल होते हैं और रचना के अंत में आते–आते छटपटाने लगते हैं। 'दिलचस्प' की रचनाओं में समाज के हर पहलु का अंकन है।

'दिलचस्प' की रचना **'बातें दुनिया भर की'** में समाज में व्याप्त कुरीतियों पर प्रहार किया गया है। समाज में कन्या भ्रूण एक ऐसी सामाजिक कुरीति है जिस पर प्रहार करते हुए दिलचस्प कहते हैं–

> **''बस आप एक कह दीजिए कि यह जो कुछ मैंने सुना, सब झुठ है, दरअसल यह सब सुनकर मैं दहल गई हूँ। मेरे हाथ भी इतने नाजुक है– बताषे जैसे कि डॉक्टर के क्लीनिक की तहफ जाते वक्त आपकी चुन्नी जोर से नहीं खींच सकती।''** (बातें दुनिया भर की, पृ.स. 20)

समाज व्याप्त दहेज प्रथा जैसी कुरीति का चित्रण भी अपनी रचनाओं में करके समाज से दूर करने का प्रयास दिलचस्प ने किया और अपनी बात को मार्मिक ढ़ंग से प्रस्तुत किया–

इस दहेज ने दिलचस्प,
दिल चाक–चाक कद दिए,
सिन्दूर की लाज हटा,
असंख्य घर खाक कर दिय।

राजनीतिक यथार्थ का चित्रण :

'दिलचस्प' ने राजनीतिक विद्रूपताओं का चित्रण अपने व्यंग्य के माध्यम से किया। उनका प्रिय विषय राजनीति है तथा राजनेताओं पर उन्होंने सर्वाधिक व्यंग्य किए हैं। राजनेताओं पर व्यंग्य करते हुए उन्होंने कहा है कि नेता निजी स्वार्थ के पीछे जनता की नहीं देखते उनके लिए उनकी कुर्सी बनी रहें, यही महत्वपूर्ण हैं। दिलचस्प ने मदारी व जमूरे के संवाद के माध्यम से करारा व्यंग्य किया है–

"जमूरा – आका आज के माननीय टिकाऊ कम, बिकाऊ अधिक है,
मदारी – सत्ता प्राप्ति या सत्ता की स्थिरता के लिए तरह–तरह की तिकड़में रची जाती है।" (युगपक्ष – 21.08.2020)

इसी प्रकार आत्मकथा एक नेता की, लो आया चुनाव का मौसम, प्रतिशत में नेता नामक व्यंग्य में उन्होंने नेताओं के दोगलेपन का चित्रण किया गया है जिसमें आज के नेताओं की स्वार्थ प्रियता पर चोट की गई है।

धार्मिक यथार्थ का चित्रण :

वर्तमान में धर्म के नाम पर समाज में पाखण्ड व्याप्त हो गया है। धर्म के नाम पर मुल्ला–मौलवी, पंडीत आदि जनता का धार्मिक शोषण कर रहें हैं। जनता धार्मिक आडम्बर के इस चक्रव्यूह में फंसती जा रही है। 'दिलचस्प' ने अपनी रचना '**अंधविष्वास पर प्रहार**' के शीर्षक 'कलयुग में भगवान : पैसों का नुकसान' में इस प्रसंग को लेकर कहा है–

"पत्थर ना पसीजा, हर रोज शीष झुकाने से
शायद अब वह खुष होगा, इष्तिहार छपाने से।"

(अंध विश्वास पर प्रहार – पृष्ठ संख्या 05)

दिलचस्प ने इस विषय पर बेबाक टिप्पणी की क्योंकि अंधविश्वासी व्यक्तियों व श्रद्धालुओं को उल्लू बनाया जा रहा है। दिलचस्प ने इसके माध्यम से लोगों को जागरूक करने का प्रयास किया और कहा कि अपने मन में बसे असली ईश्वर को पहचानों तभी सच्ची इबादत होगी और श्रद्धा का अभिवाद होगा।

(A High Impact Factor, Monthly, Peer Reviewed & Referred Journal)

| e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2320-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 8.118|

||Volume 11, Issue 11, November 2022||

| DOI:10.15680/IJIRSET.2022.1111121 |

निष्कर्ष :

नारायण सिंह राजावत 'दिलचस्प' साहित्य में राजनीतिक अदूरदर्शिता, सत्य, सदाचार, ईमानदारी और कर्त्तव्यनिष्ठा जैसे शाश्वत मूल्यों का स्थान विसंगतियों ने ले लिया है। 'दिलचस्प' का साहित्य समाज में व्याप्त अव्यवस्था पर आक्रोश के साथ हमला करता है। इनके द्वारा राजनीति पर करारा व्यंग्य किया गया है जो राजनीति को स्वच्छ बनाने में योगदान देगा वहीं सामाजिक व्यवस्था पर व्यंग्य समाज की गंदगी दूर करने में सहयोग देगा। रचनात्मक लेखों की उनकी अनवरत यात्रा अभी भी हिन्दी साहित्य के भण्डार को समृद्ध करने में अपना योगदान कर रही है और आगे भी करती रहेगी।

संदर्भ ग्रंथ –

1. आम चुनाव 'कुछ खट्टी कुछ मीठी'।
2. खुदा मिल गया बुतखाने में।
3. बतें दुनियां भी की।
4. अंधविश्वास पर प्रहार।
5. अनमोल अफसाने।
6. हिन्दी व्यंग्य साहित्य और हरिशंकर परसाई– डॉ. मदालसा व्यास।
7. हिन्दी व्यंग्य का इतिहास– सुभाष चन्दर।
8. हिन्दी साहित्य में हास्य रस– डॉ. बरसाने लाल चतुर्वेदी।
9. भारतीय हास्य–व्यंग्य कोश– सं. डॉ. बरसाने लाल चतुर्वेदी, किताबघर, नई दिल्ली।

स्माचार पत्र–पत्रिकाएं –

1. दैनिक युगपक्ष – दैनिक, फड़ बाजार, बीकानेर।
2. आजकल (पत्रिका) – साहित्य में व्यंग्य की भूमिका (सम्पादकीय, फरवरी–1993)

INNO SPACE

SJIF Scientific Journal Impact Factor

Impact Factor: 8.118

doi crossref

INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

निस्केयर NISCAIR

INTERNATIONAL JOURNAL OF INNOVATIVE RESEARCH

IN SCIENCE | ENGINEERING | TECHNOLOGY

9940 572 462 6381 907 438 ijirset@gmail.com

Scan to save the contact details